

भगवान मिलन के बाद भी प्यासे...!!!

कई बार ऐसा होता है कि हमें यह अनुभूति है कि भगवान मिल गया, ज्ञान भी मिल गया, मार्ग भी मिल गया, फिर भी जीवन में कभी-कभी क्रोध, अशान्ति, अधीनता, कभी-कभी मारीपन, सूनापन आ जाता है। कभी-कभी बोझ-सा लगता है, तो कभी-कभी ठहराव आ जाता है या दृष्टि-वृत्ति-कृति की चंचलता आ जाती है। तब मन में प्रश्न उठता है— 'भगवान मिलने के बाद भी जो पुरुषार्थ की प्रोग्रेस होनी चाहिए वो नहीं हो पाती, ऐसा लगता है कि सागर के पास होते हुए भी प्यासे रह जाते हैं।' ऐसी अवस्था होने पर क्या पुरुषार्थ करें, कौन से अभ्यास करने की जरूरत है उसके बारे में समझते हैं। इसका उत्तर दोष भावना में नहीं, बल्कि अभ्यास की गहराई में छिपा है।



का अभ्यास

अशुद्ध दृष्टि पहले आती है, फिर वृत्ति बिगड़ती है और अंत में कृति। इसलिए सुधार दृष्टि से शुरू करें।

हर आत्मा को देखते समय मन में एक विचार चलाएं— "यह आत्मा भी भगवान की है, यह भी शान्ति का स्वरूप है और वो आत्मिक दृष्टि से मेरा भाई है।" दृष्टि शुद्ध होगी तो वृत्ति स्वतः शुद्ध होने लगेगी।

4. प्यास इसलिए रहती है क्योंकि रस का अभ्यास कम है

भगवान मिलन का आनंद कोई विचार नहीं, एकरस(अनुभूति) है। यदि मन बार-बार बाहर भागता है, तो भीतर का रस कम अनुभव होता है।

रोज 10-15 मिनट बिना शब्दों के, केवल यह अनुभव करें— "मैं सुरक्षित हूँ, मैं भगवान की छत्रछाया में हूँ।" यही अभ्यास प्यास को तृप्ति में बदलता है।

5. सम्पूर्ण आनंद के लिए सबसे शक्तिशाली अभ्यास

कोई भी कर्म करने से पहले एक सेकण्ड रुककर संकल्प करें— "मैं अनादि सम्पूर्ण हूँ, की स्थिति में स्थित हो जाएँ।" "मैं यह कर्म भगवान के साथ, श्रेष्ठ स्थिति में कर रहा हूँ।" यह छोटा-सा अभ्यास जीवन को ऊँचाई देता है।

भगवान से मिलन के बाद भी यदि कभी कमजोरी दिखाई दे, तो निराश न हों। यह असफलता नहीं, बल्कि संकेत है कि अभ्यास को और गहरा करना है।

जब आत्म-स्मृति, शान्ति, पवित्र दृष्टि और रस का अभ्यास बढ़ता है, तब भगवान मिलने का सम्पूर्ण आनंद, स्वाभाविक रूप से, हर क्षण अनुभव होने लगता है।

1. केवल मिलन नहीं, स्थिति में स्थित होना जरूरी

भगवान से मिलन होना एक महान सौभाग्य है, लेकिन मिलन का आनंद तभी स्थाई बनता है जब मैं अपनी श्रेष्ठ स्थिति में टिक पाता हूँ। यदि मैं बार-बार पुराने संस्कारों में चला जाता हूँ, तो इसका अर्थ है कि मिलन हुआ है, पर स्थिति स्थिर नहीं हुई, न ही बदली है। उसके लिए प्रैक्टिकल अभ्यास दिन में कई बार 30-30 सेकण्ड के लिए रुककर करें— "मैं आत्मा हूँ, शान्ति मेरा स्वभाव है, भगवान मेरे साथ है।" जब हमारी सोच में ये होगा तो स्थिति बदलेगी और जब स्थिति बदलेगी तो परिस्थिति अपने आप बदल जायेगी।

को दोष न दें, बल्कि चेक करें

क्रोध या अशान्ति आना यह सिद्ध नहीं करता कि भगवान नहीं मिले, बल्कि यह बताता है कि उस समय कनेक्शन ढीला हुआ है। ऐसे समय पर एक फॉर्मूला अपनाएं...

STOP :-

S - STOP:- तुरंत रुक जाएँ।

I - Think:- अभी मैं आत्मिक-भान में हूँ या देह-भान में हूँ?

O - Observe:- मेरे भीतर कौन-सा संस्कार एक्टिव हुआ?

P - Plug in:- मन को फिर से भगवान से जोड़ें। यह अभ्यास धीरे-धीरे संस्कारों को कमजोर करता है और श्रेष्ठ संस्कारों को प्रबल करता है।

2. क्रोध और अधीनता आने पर खुद 3. दृष्टि, वृत्ति और कृति की पवित्रता



चित्तौड़गढ़-राज. राष्ट्रीय स्वदेशी महोत्सव के अवसर पर सनातन कृषि संस्कृति, ग्राम स्वराज कृषि, ग्राम विकास विभाग एवं ब्रह्माकुमारीज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित विशेष प्रदर्शनी का अक्लौकन करने के पश्चात् राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागडे को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. आशा दीदी।



जयपुर-श्रीनिवास नगर(राज.) राजस्थान भारतीय जनता पार्टी प्रदेश अध्यक्ष एवं राज्य सभा सांसद मदन राठौड़ से स्नेह मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए अजमेर क्षेत्र निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शांता दीदी। साथ है ब्र.कु. रूपा, ब्र.कु. हेमा एवं ब्र.कु. काजला।



पानीपत-हरियाणा। विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर 'ध्यान के चमत्कार' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में गजेन्द्र सलूना, प्रतिनिधि मनोहर लाल खट्टर, सेंट्रल मिनिस्टर, दिल्ली को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सल्ला दीदी, पानीपत सर्कल इंचार्ज, राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण, डायरेक्टर, ज्ञानमानसरोवर रिट्रीट सेंटर। साथ है आचार्य महामंडलेश्वर कमल किशोर, सहासपुर।

ऊपर से नीचे	अव्यक्त मुस्ली 28-02-2003 (फेब्रु-01) 2025	बायें से दायें
1. शिव बाप अपने शालिग्राम बच्चों के साथ अपनी और बच्चों के की जयन्ती मनाने आये हैं। यह जयन्ती कितनी वण्डरफुल है। (5) 2. कल चक्कर लगाने आयेगी। का भी आपसे प्यार है ना क्योंकि आजकल तो सभी धूमधाम से सेवा का प्लैन बना रहे हैं ना। (2) 3. सम्पूर्ण आप ब्राह्मण जीवन की सबसे बड़े ते बड़ी प्रॉपर्टी है, गैयल्टी है, पर्सनल्टी है। (4) 4. बापदादा में मुस्करा रहे थे- यह बच्चे शिवरात्रि पर यहाँ-वहाँ भाषण करते हैं ना। (3) 5. कर्नाटक की घरनी से वारिस बहुत निकल सकते हैं। अच्छे, अच्छे हैं, बापदादा की पड़ती है लेकिन टीचर्स की नहीं पड़ी है। (3) 9. हर एक पाण्डव को अपने मस्तक में का तिलक सदा स्मृति में रखना चाहिए। (3) 11. बापदादा ने देखा कि बच्चों को भी यह 5 के महाभूत जो हैं, महारूप उनसे तो प्यार कम हो गया है लेकिन इन के	जो बाल-बच्चें हैं ना, छोटे-छोटे अंश मात्र, वंश मात्र, उससे अभी भी थोड़ा-थोड़ा प्यार है। (3) 12. विजय का गायन पाण्डवों का है। शक्तियों का गायन देने का है। (2) 15. सिवाए आपके कोई रहम नहीं कर सकता। इसलिए अभी समय प्रमाण रहम के सागर बनो। (3) 16. आज बाप अपने शालिग्राम बच्चों के साथ अपनी और बच्चों के अवतरण की जयन्ती मनाने आये हैं। (2) 19. अभी थोड़ी-थोड़ी पुकार सुनों तो सही, बिचारे बहुत पुकार रहे हैं, जिगर से पुकार रहे हैं, रहे हैं। साइंस वाले भी बहुत चिल्ला रहे हैं, कब करें, कब करें, कब करें, पुकार रहे हैं। (3) 21. एकसा हो जाए, तो एकग्रता की शक्ति निर्णय बहुत अच्छर करती है। (2) 22. बाप की भुजायें अर्थात् बाप के बल की निशानी हो। इसीलिए देवियों को, देवताओं को ज्यादा भुजायें दिखाई हैं। भी रावण को दिखाये हैं। (2)	सम्पन्नता की तैयारी है? तैयारी है? को बुला रहे हो तो तैयारी है? (3) 13. बापदादा को कोने-कोने में याद आते हैं। सारा कर्नाटक के वारिस चला सकते हैं। क्या समझा? अभी निकालना और बहुत सहज निकल सकते हैं। (2) 14. कभी भी अज्ञान अर्थात् कमजोरी की, अलवेलेपन की, आलस्य की नींद नहीं आये। या थोड़ा-थोड़ा आवे तो हर्जा नहीं है? खाते हो? (3) 15. ऐसे नहीं है कि प्रवृत्ति वाले 108 की में नहीं आ सकते हैं। मन से सरेण्डर, सरेण्डर की लिस्ट में ही हैं। (2) 17. पहले तो आप शक्तियों को, रूप पाण्डवों को रहम आना चाहिए, कितना पुकार रहे हैं। (3) 18. लेते हैं जागरण का - रात जागते हैं ना! आप ब्राह्मण भी अज्ञान नींद से जागने का लेते हो। (2) 20. बापदादा को अभी इतना दुःख देखा नहीं जाता है। पहले तो आप शक्तियों को, देवता रूप पाण्डवों को आना चाहिए। (3) 23. अभी थोड़ा सा यह 'मैं' को आज फुल सरेण्डर करेंगे तो होने शुरू हो जायेंगे। यह मैं पन का पर्दा आगे है वो हट जायेगा तो हर एक से बाप का होगा। (4)